ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3592327

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

Arts

मधुबनी लोक चित्रकला पर समकालीन प्रभाव

चरनजीत सिंह [1]
[1] चित्रकला विभाग, धर्मसमाज महाविद्यालय, अलीगढ़

शोध-सारांश
आज मधुबनी लोक चित्रकला में कलाकार नित नये प्रयोग कर रहे हैं यह प्रयोग बदलते समय के साथ-साथ स्वाभाविक भी हैं। यह परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत् सत्य है। हमारा मानना भी यही है कि कला वही है। जो बदलते समय के साथ परिवर्तित होती रहे, लेकिन अपने मूल स्वरूप को खोने न दे। इसी भावना के साथ आज भी मधुबनी चित्रकला के प्रमुख क्षेत्र जितवारपुर, दरभंगा, पूर्णिया व आस-पास के क्षेत्रों में मधुबनी लोक चित्रकला का अंकन किया जा रहा है। और पहले भी किया जाता रहा है।
अगर आज हम दोनों दशकों (पूर्व व वर्तमान) की लोक चित्रकला व उनके कलाकारों की कार्य शैली का गहन अध्ययन करें तो हमें प्राप्त होता है कि लोक कला शैली कुछ हद तक परिवर्तित हुयी है लेकिन मधुबनी लोक चित्रकला के प्रति भावनात्मकता वही है। ग्रामीण अंचलों में आज भी कुछ महिलाएँ प्राकृतिक चीजों को लेकर कार्य कर रही हैं। वही समकालीन कलाकार समकालीन विषयों को लेकर अपनी कार्य शैली में व्यस्त है। जहाँ पहले मधुबनी लोक चित्रों के विषय मुख्य रूप से देवी-देवता व प्रकृति से सम्बन्धित रहे हैं। मधुबनी लोक चित्रकला का प्रयोग पहले महिलाएँ अपने घरों की दीवारों व आँगनों को सजाने के लिये करती थी। यहाँ की महिलाएँ अपनी कल्पना से ऐतिहासिक, धार्मिक व आध्यात्मिक विषयों को अपनी कला में समाहित करती है। धार्मिक लोक जीवन मधुबनी लोक चित्रों के मुख्य विषय-वस्तु रहे हैं। मधुबनी क्षेत्र का छोटा सा गाँव जिलवारपुर इस कला का केन्द्र रहा है।
मधुबनी लोक चित्रा में विषय, तकनीक, माध्यक, रंग-संयोजन, आदि समय के साथ-साथ परिवर्तित होते रहे है। लेकिन सभी परिवर्तनों के बावजूद अपनी लोक भावना को खोने नहीं दिया है। यह कला महिला प्रधान होने के साथ आज इस पुरूषों ने भी अपना लिया है। जिससे मधुबनी लोक कलाकार लोक चित्रण (मधुबनी चित्रण) के माध्यम से अपना जीवन-यापन कर रहे हैं। प्रतिदिन अपने कार्य के नये आयाम देने के लिये क्रियाशील रहते हैं।

मुख्य शब्द – मधुबनी, लोक चित्रकला, समकालीन

Cite This Article: चरनजीत सिंह. (2019). "मधुबनी लोक चित्रकला पर समकालीन प्रभाव." *International Journal of Research - Granthaalayah*, 7(11SE), 222-228. https://doi.org/10.5281/zenodo.3592327.

प्रस्तावना-

शोध पत्र के माध्यम से बिहार की लोक चित्रकला ''मधुबनी लोक चित्रकला पर समकालीन प्रभाव'' पर प्रकाश डालने का संक्षिप्त प्रयास कर रहा हूँ। बिहार राज्य अपनी ऐतिहासिक व धार्मिक संस्कृति के लिये विख्यात

है। जिसमें हिन्दू, बौद्ध, मुस्लिम, सिक्ख आदि संस्कृतियाँ पल्लवित हुयी। जिससे यहाँ का ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व बढ़ जाता है। यह क्षेत्र मखानों की खेती के लिए भी विशेष रूप में जाना जाता है। बिहार क्षेत्र धार्मिक संस्कृति से ओत-प्रोत है। इसी कारण यहाँ की मधुबनी लोक चित्रकला अद्वितीय है। वर्तमान में देश ही नहीं वरन् विदेशों में भी मधुबनी लोक चित्रों की अलग पहचान है। यह चित्र विशेष रूप से हिन्दू देवी-देवताओं को ध्यान में रखकर चित्रण करने की परम्परा रही है। मधुबनी लोक चित्रों को ग्रामीण व अशिक्षित महिलाओं ने जीवित रखा है। वही आज अशिक्षित महिलाएँ ही नहीं बल्कि शिक्षित व प्रशिक्षित महिलाओं व पुरूषों के द्वारा मधुबनी लोक चित्रकला को आगे बढ़ाने में अग्रसर है।

(चित्र सं0-1)

बिहार के मिथिलांचल क्षेत्र की मधुबनी लोक चित्रकला का इतिहास प्राचीन है। मधुबनी लोक कला की शुरूआत रामायण काल से मानी जाती है। मिथिला के राजा जनक ने अपनी पुत्री सीता के विवाह के अवसर पर मधुबनी लोक चित्रकला का चित्रण सम्पूर्ण मिथिला क्षेत्र में स्थानीय ग्रामीण महिलाओं द्वारा कराया था।[1] मधुबनी कला के विषय मुखय रूप से हिन्दू देवी-देवता व प्रकृति से सम्बन्धित रहे है। मधुबनी लोक चित्रकला का प्रयोग पहले महिलाएं- अपने घरों की दीवारों व आंगन को सजाने के लिये करती थी। जिसके पीछे कोई न कोई मंगल भावना छिपी होती थी। मिथिला की महिलाएं अपनी-अपनी कल्पना के माध्यम से विभिन्न ऐतिहासिक, धार्मिक व आध्यात्मिक विषयों को अपनी कला में समाहित करती है। धार्मिक लोक जीवन मधुबनी चित्रों के मुखय विषय-वस्तु रहे हैं। मधुबनी क्षेत्र का छोटा सा गांव जितवारपुर इस कला का केन्द्र रहा है।

मधुबनी लोक चित्रकला शैली में मुख्य रूप से राम-सीता, शिव-पार्वती, राधा-कृष्ण, काली, दुर्गा, श्री गणेश-लक्ष्मी एवं हनुमान आदि विषयों को विशेष रूप में चित्रित किया जाता है।[2] यह लोक चित्रकला शैली की परम्परा पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तान्तरित होती रहती है। मधुबनी लोक चित्रकला रेखा प्रधान होने के साथ-साथ रंग प्रधान भी है। इस लोक चित्रकला में रूप निर्माण हेतु रेखाओं का प्रयोग नहीं किया जाता बल्कि चित्रों में बचे खाली स्थान की पूर्ति के लिए भी रेखाओं को समानान्तर, सीधी, खड़ी, पड़ी, कर्णवत, घुमावदार, वक्राकार आदि रूप में रेखाओं का प्रयोग किया जाता है।[3] मधुबनी लोक चित्रकला के कलाकार शिव-शक्ति को पुरूष-नारी प्रतीक रूप में निरूपित करते हैं।[4] इस लोक चित्रकला में चित्र शुद्ध-देश रंगों द्वारा बनाये जाते थे। जो कि सीधे तौर पर प्रकृति से प्राप्त किये जाते थे। आज प्राकृतिक रंगों की जगह बाजार से उपलब्ध रासायनिक रंगों का प्रयोग किया जा रहा है। लेकिन फिर भी आज कुछ गांवों की महिलाएं वहीं प्राकृतिक रंगों का प्रयोग कर रही है। जहाँ पहले यह चित्रकला भूमि व भित्ति पर देखने को मिलती थी वहीं वर्तमान समय मे इसके रूप, रंग, आधार आदि सभी में परिवर्तन देखने को मिलता है।

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3592327

मधुबनी लोक चित्रों को मुख्यतः तीन भागों में रखा जाता है।(5)

(1) भित्ति चित्रण (कोहबर) –

चित्र सं0 (2)

(2) भूमि चित्रण (अरिपन) -

चित्र सं0 (3)

(3) पट चित्रण (कागज, कपड़ा व कैनवास आदि) –

चित्र सं0-4

चित्र सं0-5

चित्र सं0-6

मधुबनी लोक चित्रकला में मुख्य रूप कोहवर चित्रण (कोहवर लेखन) इस कला का केन्द्र बिन्दु रहा है। जिसमें मंगल सूचक मान्यताओं से निहित प्रतीकों का प्रयोग किया जाता है। जिसमें कमल, बाँस, लैला-मजनू, तोता-मैना, मछली, कछुआ, ग्रह आदि मुख्य रूप से चित्रित किये जाते है। कोहवर में स्थानीय देवी-देवताओं को भी स्थान दिया जाता है। वही भूमि चित्रण में विभिन्न प्रकार के अरिपनों का निर्माण किया जाता है।[6] प्रत्येक मांगलिक कार्य पर एक विशेष प्रकार का अरिपन तैयार किया जाता है। जिसमें विभिन्न मंगल सूचक प्रतीकों का प्रयोग किया जाता रहा है। जिसका विशेष प्रभाव है। अरिपन में विशेष रूप से पशु-पक्षी, मनुष्य, पेड़-पौधे, दीप, स्वास्तिक, गुड्डे-गुड़िया व देवी-देवताओं आदि को स्थान दिया जाता है।[7] जो आज भी समाज में प्रचलित

है। इसे महिलाएं उत्सवों व त्यौहारों पर आँगन व आँगन के बाहर चबूतरे पर गोबर से लिपाई के बाद कूँची की सहायता से तैयार करती है। आज मुधबनी लोक चित्रकला की अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी एक विशेष पहचान बना चुकी है।

मधुबनी लोक चित्रकला को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहुँचाने का श्रेय डब्लू जी आर्चर महोदय को जाता है। डब्लू जी आर्चर जी का 1934 में मिथिला में आना व 1949 में "मार्ग" पत्रिका में उनके द्वारा लिखे लेख से मधुबनी कला को पहचान मिली। मधुबनी लोक चित्रकला को विशेष रूप में सन् 1960 में अन्तर्राष्ट्रीय पहचान मिली, सन् 1961-62 में मधुबनी चित्रकला में प्रयुक्त "कागज" पर चित्रकारी ने इसे एक नयी दशा-दिशा प्रदान की।[8]

आज मधुबनी लोक चित्रकला में लोक भावनाओं (धार्मिक चित्रों) के साथ-साथ समकालीन विषयों का भी समावेश किया जा रहा है। आज मधुबनी लोक चित्रों में विभिन्न विषयों, रंगों, आधारों व माध्यमों का भी प्रयोग किया जा रहा है। जो इसे नया रूप प्रदान करती है। पहले यह लोक चित्रकला ग्रामीण जीवन तक ही सीमित थी। वही आज इस कला का परिचय देश-विदेश में भी फैला हुआ है। आज मधुबनी लोक चित्रकला घरों से निकलकर बाहरी आवरण में देखा जा सकता है। मधुबनी चित्रण विभिन्न धरातलों पर किया जा रहा है। जहाँ पूर्वकाल में भूमि व भित्ति पर परिलक्षित होता था वहीं आज इसे कागज, कपड़े, सूट-साड़ी, पेड़-पौधों, चिकनी मिट्टी के बर्तनों, विज्ञापन चित्रण रेलगाड़ी के डिब्बे आदि पर देखने को मिलता है।[9] मधुबनी लोक चित्रकला को निर्माण करने का उद्देश्य एक ही है। मधुबनी लोक चित्रों का विस्तारीकरण व संरक्षण समय के बदलते स्वरूप में मधुबनी लोक चित्रकला के विषयों में परिवर्तन देखने को मिलता है। वर्तमान समय में समकालीन विषयों को लेकर अनेक कलाकार मधुबनी लोक चित्रकला का निर्माण कर रहें है। जिसमें संतोष कुमार दास जी के विषय समकालीन भावनाओं से ओत-प्रोत है। उनकी कला समकालीन अस्थिरता को दर्शाती है।

संतोष कुमार दास जी समाज में व्याप्त सामाजिक व राजनैतिक (अस्थिरता) असमानताओं को दर्शाने का अपना एक अलग नजरिया है। संतोष कुमार दास जी का जन्म 1962 में हुआ उन्होंने अंग्रेजी में स्नातक दरभंगा से किया, इसके बाद 1990 में एमएसयू ' बड़ौदा' से ललित कला में स्नातक किया। उसके बाद अपने गांव में रहकर पारंपरिक काम करना जारी रखने का फैसला किया। उनका सबसे प्रसिद्ध चित्र कृष्णा सीरीज और गुजरात श्रृखंला है। उनके चित्र कई संग्रहालयों व संस्थागत संग्रहों ओबेरलिन संग्रहालय 'यूएसए' एथनिक आर्ट फांउडेशन 'यूएसए' मैरी सी लानुस 'डेनवर 'यूएसए' एशियन हेरिटेज फाउंडेशन, 'नई दिल्ली' में देखा जा सकता है। उन्हें 2016 में जयपुर सहित्य महोत्सव में ओजस कला पुरस्कार से नवाजा गया। इनके चित्र पारंपरिक और समकालीन कला का समिश्रण है। जो मधुबनी लोक चित्रकला को नया रूप प्रदान करते हैं।

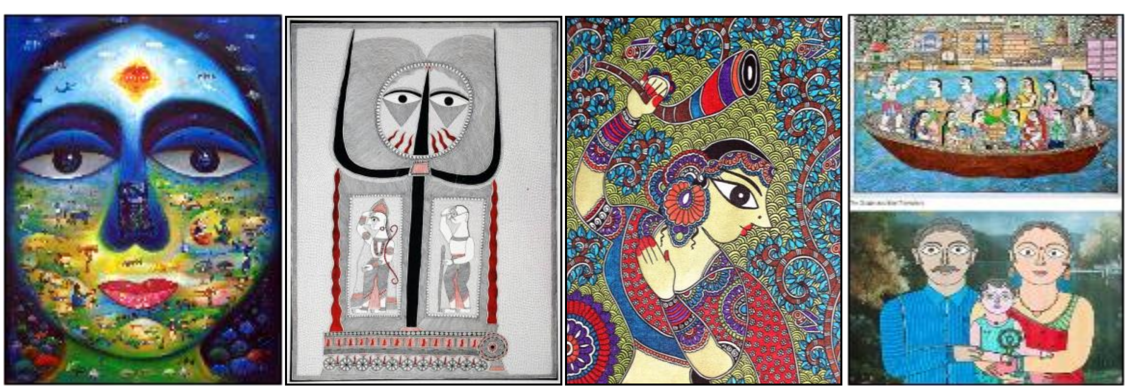

चित्र सं0 7

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3592327

संजू दास जी के चित्र भी मधुबनी कला से सम्बन्धित हैं सम्बन्धित इसलिए क्योंकि संजूदास जी पूर्ण मधुबनी शैली में कार्य नहीं करती बल्कि उनके चित्रों में आधुनिकता का समावेश है। 1972 में दरभंगा के कमरौली गांव में पैदा हुई पटना आर्ट कालेज की छात्रा रही, (1955) रविन्द्र दास जी से शादी करने के बाद उनकी कला में जो परिवर्तन आया। उनका आधुनिक और समकालीन कलाकारों के सम्पर्क में आने से उनकी कला में जो परिवर्तन आया। जिससे उनकी कला को एक नया आयाम और गति मिली।[10] मधुबनी कलाकार भारती दयाल जी का चित्रण कार्य समकालीन आधुनिक विषयों के साथ पारम्परिक कला का संयोजन है। भारती दयाल जी 1961 में उत्तर बिहार के दरभंगा जिले में समस्तीपुर में जन्म हुआ, उन्होंने अपनी उच्च शिक्षा विज्ञान विषय (एम0एस0सी0) में प्राप्त की। मधुबनी चित्रण को 1984 से अपनी गतिविधि का हिस्सा बनाया। उनके चित्रों में कृष्ण और राधा के प्रेम, लालसा, और शान्ति का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है। उन्हें 2006 में हस्त शिल्प में उत्कृष्टता के लिए भारत का राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किया गया।[11]

वही अविनाश करन बिहार के एक युवा कलाकार है। आपने मधुबनी लोक चित्रकला को और अधिक ऊँचाइयों पर ले जाने के लिए चुना है। रांटी गांव के अविनाश जी ने हिन्दू विश्वविद्यालय से ललित कला विभाग में अध्ययन किया। उनके कार्यों में महिलाओं को स्त्रीत्व व सृजन की अविभाज्यता की समझ से अधिक एक पुरूष टकटकी की तुलना में दर्शाती है। आप शहरी जीवन को चित्रित करने के लिये मधुबनी लोक चित्र शैली का उपयोग करते हैं। यह प्राथमिक रंगों का प्रयोग करते है। उन्होंने मधुबनी कलाकार गंगा देवी के कार्यों से प्रेरणा ली। अविनाश जी झारखण्ड में कैलाश सत्यार्थी चिल्ड्रन फाउण्डेशन के साथ काम कर रहे हैं।[12]

वहीं अन्य कलाकारों में कमलेश राय, रौद्री पासवान, आदि चित्रकार कार्य कर रहे हैं। जहाँ दो-तीन दशकों पहले मधुबनी लोक चित्रकार गंगादेवी, सीता देवी, महासुन्दरी, जगदम्बा देवी आदि पौराणिक व धार्मिक विषयों को लेकर कार्य किया और खयाति अर्जित की। जिसे देश ही नहीं वरन विदेशों में भी सराहा गया। वही भारत सरकार ने उन्हें "पदम श्री" व राज्य सरकार ने इन्हें राष्ट्रीय पुरस्कारों से नवाजा है। इनका अद्वितीय कार्य मधुबनी लोक चित्रकला के लिये प्रेरणा स्त्रोत है।

वही समकालीन कलाकारों ने मधुबनी लोक चित्रकला का रूप परिवर्तन ही कर दिया हैं। कुछ कलाकार विषयों का परिवर्तन कर मधुबनी की लोक भावना का सम्मान करते हुये अपने कार्य को अंजाम दे रहे है। लेकिन कुछ कलाकार उसके विषय, रूप व भावनाओं को तोड़कर एक नई मधुबनी चित्रकला को समाज के सम्मुख प्रस्तुत कर रहे हैं। वही कुछ कलाकार इस कला के कुछ चीजों को लेकर एक नये रचना संसार का निर्माण कर रहे हैं। इन सभी परिवर्तनों के बावजूद मधुबनी कला का परिचय और आगे की ओर बढ़ रहा है। समय परिवर्तन के साथ-साथ कलाकार विषय, रंग, संयोजन आदि में परिवर्तन करके एक नयी मधुबनी का स्वरूप सम्मुख प्रस्तुत करते है। वही आज समकालीन कलाकारों को भी देश व विदेश से प्रोत्साहन मिल रहा हैं व पुरस्कृत किया जा रहा है।

निष्कर्ष-

मधुबनी लोक चित्रकला की संस्कृति और सौन्दर्य उसकी रेखा, रंग, संयोजन, विषय आदि में निहित है। समकालीन कला में परिवर्तन होता जा रहा है। मधुबनी चित्रकला लोक संस्कृति का अंग है। जो ग्रामीण जीवन के सहज जीवन को प्रदर्शित करती है। जिसमें लोक चित्रकला के विषय निरन्तर परिवर्तित होते हुए भी अपनी भावनाओं को नही छोड़े हुए है। मधुबनी लोक कला पीढी-दर-पीढी चलती आ रही है। भारतीय लोक संस्कृति को परखने में मधुबनी लोक चित्रकला का अपना एक स्थान है। समय के साथ-साथ मधुबनी लोक चित्रकला में कोई भी परिवर्तन आये लेकिन अपने मूल को ध्यान में रखकर लोक चित्रकला की विरासत को आगे बढ़ाते रहे। जिससे आने वाली पीढ़ी अपने लोक इतिहास व उसमें छिपी भावनाओं को पहचान सके।

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3592327

साहित्य का पुनर्वलोकन-

मिथिला पेंटिग पर चढ़ता व्यावसायिकता का रंग-
मधुबनी लोक चित्रकला में महिलाओं का योगदान सराहनीय है। परम्पराओं को जीवित रखने के साथ महिलाओं ने अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर अपनी एक अलग छाप छोडी है। कल तक जो एक परम्परागत कला मात्र थी आज इस पर व्यवसायिकता का रंग इस कदर चढ़ता जा रहा है। मानो इसे पंख मिल गये हो।

मिथिला की महिलाओं ने परम्परा और धर्म को एक साथ जोडकर जो नई रूप का निर्माण किया वह सराहनीय है। इस कला की अनूठी दास्ता यही बतलाती है। कि यह कला केवल कला मात्र नहीं है। इसमें छिपी है भावनाएँ, जैसे-जैसे यह कला विकसित हुयी दीवारों व फर्श से उठकर कागज, कैनवास, साड़ी, कपडा, चीनी के बर्तनों व कार्टून आदि में इसका प्रयोग यह बतलाता है कि मधुबनी चित्रकला लोक जीवन में कितना महत्व रखती है। इस कला के उभरते कलाकार अपने चित्रण कार्य व विषय की परिवर्तन शीलता से इसमें नये-नये प्रयोग कर रहे है। जिससे इस कला को नई ऊर्जा प्रदान हो रही है। पौराणिक विषयों से लेकर समकालीन विषयों तक मधुबनी लोक चित्रकला के कलाकारों में जो उत्साह दिखता है, वह इस बात का साक्षी है कि यह कला उनके जीवन में कितना महत्व रखती है। समय परिवर्तन के साथ कलाकार की बुद्धिमत्ता के संयोजन से एक नयी मधुबनी लोक कला का रूप दिखने को मिलता है। और यह कला समीक्षकों व कला-अनुयायियों को पसन्द भी आ रही है। जिससे इसकी ख्याति बढ़ती ही जा रही है।

संतोष कुमार दास जी-

बिहार राज्य के राती गांव में जन्मे संतोष कुमार दास जी मधुबनी लोक चित्रकला को नये आयाम तक पहुँचा रहे हैं। उन्होंने 70 के दशक के मध्य में मिथिला (मधुबनी शैली) में चित्रण शुरू किया। पूर्वी भारत में बिहार राज्य में मिथिला के प्राचीन क्षेत्र के लिए नामित कला के एक पारम्परिक रूप का अभ्यास करते हुए, आप हिन्दू पौराणिक कथाओं और आइकनोंग्राफी हाल के भारतीय इतिहास की घटनाओं और रोजमर्रा की जिन्दगी के उपाख्यानों से प्रेरणा लेते हैं। मिथिला की अनूठी मधुबनी शैली और तकनीक का इस्तेमाल करते हुए उन्होंने नई जमीन को प्रशस्त करते हुए विषयों को सुद्दढ़ किया। आपने एम0एस0 यूनिवर्सिटी "बडौदा" में पढ़ाई की। मधुबनी के छोटे शहर में मिथिला कला संस्थान में पहले शिक्षक थे। उनके काम को एशिया सोसाइटी में राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शित किया जा चुका है।

संजूदास जी (www.biharidhamaka.blogspot.com)

1) friday-10 November 2017) मिथिला लोक कला को आधुनिक शैली से जोडने वाली प्रथम चित्रकार)
2) Hindi Newsday today/a/article/-22/12/17
3) Biharkhoj Khabar 10-15

संजू दास जी एक विख्यात चित्रकार है। इनकी पेंटिग में मिथिला शैली के तत्व तो विराजमान है। किन्तु वह उससे काफी आगे निकल चुकी हैं वह स्त्री का रूप सौन्दर्य नहीं बल्कि उनके श्रम और सपनों की तस्वीर निरूपित करती हैं। वह अपनी रचनाशीलता के द्वारा महिला सशक्तीकरण पर पेंटिंग बनाती हैं। उन्होंने अपने चित्रों में मिथिला शैली की आत्मा चटख रंग, बारीक रेखांकन, अलंकारिक बेलबूटे और प्रकृति को अपनी कलाकृतियों में समेटा है। उनकी कला का आधार मिथिला कला है तो ट्रीटमेंट आधुनिक सन्दर्भ और प्रतीक मिथिला के ग्रामीण जीवन से जुडे हैं। उन्होंने पहले छोटे-छोटे रेखांकन और जलरंग से शुरूआत की अब अधिकतर एक्रेलिक माध्यम में बड़े-बड़े काम करना पसन्द करती है।

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3592327

(भारती दयाल) Bharti dayal http://en.in.wikipedia.org>wiki-

भारती दयाल मधुबनी चित्रकला में जाना माना नाम है। उन्होंने विज्ञान विषय में परास्नातक करने के बाबजूद भी मधुबनी लोक चित्रकला को अपने जीवन में आत्मसात किया। उन्होंने मधुबनी कला को अपने घर की महिलाओं से सीखा व आगे परिवर्तन करके इसे नये रूप में निखारा है। उन्होंने कृष्ण व राधा के प्रेम आदि को अपनी कला में चित्रित किया है। उनके चित्र पारम्परिक व समकालीन कला का समिश्रण है। आज वह दिल्ली में रहकर इस कला को आगे बढ़ा रही है। 2017 में उन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार से नवाजा गया।

अविनार्श कर्णः www.avinashkarn.com>catagrerg-2017
http://www.indiamantra.com>Madhubani-2feb2017

मधुबनी लोक चित्रकला को आगे बढ़ाने में युवा कलाकार अविनाश जी अग्रसर है। आपने सभी परिश्रम और दृढ़ संकल्प से मधुबनी लोक चित्रकला को अधिक ऊँचाइयों पर ले जाने के लिये चुना है। वर्तमान में आप मधुबनी शैली में डिजीटल कार्यों का निर्माण करने में लगे हुए है। इनकी बनाई पेंटिंग में पर्यावरण को काफी करीब से देखा जा सकता है। इनकी बनाई पेंटिंग में ज्यादातर जडी बूटी लाना, पानी लाना, शादी विवाह से जुडी यादें होती है। आप गंगा देवी जी की कला से प्रभावित हैं आप मधुबनी चित्रों में नये प्रयोग के लिये तत्पर रहते है। आप झारखण्ड़ में कैलाश सत्यार्थी चिल्ड्रन फाउड़ेशन के साथ मिलकर कार्य कर रहे है।

सन्दर्भ

[1] अमन अवधेश (मिथिला की लोक चित्रकला की सफलताएँ-असफलताएँ) ललित कला अकादमी (नई दिल्ली)
[2] अमन अवधेश (मिथिला की लोक चित्रकला की सफलताएँ-असफलताएँ) ललित कला अकादमी (नई दिल्ली)
[3] Madhubani media blogspot in /2016/07
Madhubani mithila paintings
[4] मिथिला कथाः- मधुबनी मिथिला पेंटिंग
[5] Gyanpradayain.blogspot.in/2016/06/blogs-post-43-html
[6] Gyanpradayain.blogspot.in/2016/06/blogs-post-43-html
[7] Aaj ka itihas.blogspot.in मधुबनी पेंटिंग-गर्दिश में एक चित्र शैली
[8] Aaj ka itihas.blogspot.in
[9] www.delhievents.com>Art-event- 10 जनवरी से 10 फरवरी 2019 (संतोष कुमार दास की एकल प्रदर्शनी)
[10] भारती दयाल
[11] अविनाश कर्ण